समकालीन कविता में लोकोन्मुखी दृष्टि

(कवि विजेन्द्र के संदर्भ में)

हरिहरानंद शर्मा, व्याख्याता हिन्दी
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, बौंली जिला सवाई माधोपुर (राज.)

सारांश –

कविता, लोक में उपस्थित समस्त सन्दर्भो की शब्दगत संरचना है। लोक जनसमुदाय का प्रतीक है, जिसका केन्द्र मनुष्य है। मनुष्यता को बचाने और संरक्षित करने के लिए जनसमुदाय में उपस्थित कवि जनमानस की मानसिक स्थिति, उसकी संवेदना को अपने अन्तस में अनुभव करता है। यह संवेदनात्मक अनुभव कवि के जातीय धर्म (कवि कर्म) के दायित्व बोध को जाग्रत करती है, जिसका कार्य समाज के यथार्थ को चित्रित कर, लोक में मनुष्यता की स्थापना करना होता है। यही लोकोन्मुखता का बीज है। इस शोध आलेख में विजेन्द्र की कविता की लोकपक्षीय दृष्टि, सामाजिक सन्दर्भ, मनुष्य के संघर्ष, और मानवीय संवेदना के यथार्थ की खोज के साथ – साथ भविष्य की संभावनाओं के प्रति कवि के चिन्तन की विवेचना है।

संकेताक्षर – लोक, मनुष्यता, कवि कर्म, विजेन्द्र, समकालीन कविता।

हिन्दी कविता की समकालीन काव्यधारा की लोकधर्मी काव्य परंपरा के कवियों में विजेन्द्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। विजेन्द्र की कविताओं में नागार्जुन – त्रिलोचन – केदार की कविताओं का राग है, निराला का सा आक्रोश है, और प्रकृति की क्रियात्मकता का अद्यतन प्रस्फुटन है। विजेन्द्र की कविता, समकालीन कविता की उस धारा की कविता है जो लोक के साथ – साथ चलते हुए, लोक एवं लोकतंत्र की पीड़ा को शब्दगत करती है। विजेन्द्र की कविता मनुष्य की कविता है। उनकी कविता के केन्द्र में मनुष्य है अतः उनकी कविता का मूल्यांकन मनुष्य और मनुष्यता के घेरे में किया जाये तो अधिक उपयोगी व सार्थक होता है। इसका कारण बताते हुए विजेन्द्र कहते है कि कविता का कोई देश नहीं होता वह सार्वभौमिक होती है। ऐसे में वही कविता उपयोगी और महत्त्वपूर्ण होती है, जिसके केन्द्र में मनुष्य और उसकी संवेदना मौजूद हो।

हिन्दी कविता में बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और इक्कीसवीं सदी के आरभ में कुछ बदलाव आये। यह बदलाव भूमंडलीकरण के जादुई और लुभावने आकर्षण के कारण था। इसका प्रभाव यह हुआ कि पूंजीवादी सभ्यता का जादू, आम आदमी के सिर चढकर बोल रहा था। इसका परिणाम यह हुआ कि लोकधर्म को चुनौती देने वाले कारक यथा मुक्त बाजारवाद, विकृत उपभोक्तावाद, राजनीतिक अधिनायकवाद, पूँजीवादी प्रभुता, भ्रष्ट आचरण, श्रम का अपमान, मूल्यों का विघटन, हिंसक वृत्तियों का

उभार, जातिगत एवं धार्मिक उन्माद आदि उत्पन्न हुए। यद्यपि ये कारक वैश्विक थे, पर इसकी परिधि में आम भारतीय आ गया था। साथ ही साथ विजेन्द्र ने यह भी महसूस किया कि उस समय के वे साहित्यकार जो लोक की बात कर रहे थे वे भी भटकाव की ओर हैं। भले ही उनका कारण चाहे जो भी रहा हो। खैर, यह सब होता देख विजेन्द्र ने इस लोकतांत्रिक खतरे को भॉपा और अपनी वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए कविता को चुना।

कविता को समकालीन परिप्रेक्ष्य में अधिक संप्रेषणीय मानते हुए कवि का कथन है – ''कविता मेरे लिए एक उत्कृष्ट उत्पादक श्रम है। यह श्रम मैं अपने देश की जनता की सेवा के लिए करता हूॅ। मेरे लिए साहित्य अपने देश की जनता की सेवा का ही एक रचनात्मक विकल्प है।..... जनता की सेवा कविता कई तरह से करती है एक तो मैं उसके सतत् संघर्ष में शिरकत कर उसका पक्ष लेते हुए अनुभव करता हूं। दूसरे, यदि सामान्य जन मेरी कविता पढे तो उसे लगे कि मैं उसके जीवन, परिवेश या सुख – दुख की बात भी कह रहा हूं। तीसरे, वह अपनी रचनात्मक क्षमताओं के बारे में सजग होकर अपनी शक्ति को पहचाने। कलाकृति से उसका मन उन्नत हो, अपने अधिकारों के लिए वह संघर्ष करे, वह समझे कि वे कौनसी शक्तियॉ हैं जो उसका शोषण करती है, उसे आगे बढने से रोक रहीं हैं। समाज में वे कौनसी ताकतें हैं जो उसकी मुक्ति के लिए संघर्षरत हैं, यही वजह है कि कविता मुझे कलाकृति होते हुए भी एक अस्त्र लगती है। ऐसा अस्त्र जो जनता के वर्ग शत्रुओं के विरूद्ध काम आ सके। जो जनविरोधी है उसके विरोध में कविता खडी हो। उसमें श्रम का महत्त्व हो, उसका सौन्दर्य झलके, जनता को संगठित होने का आह्वान करे। उसमें जनता के प्रति सामाजिक अन्याय का प्रतिरोध भी हो।''**1**

इस कथन में विजेन्द्र के कवि कर्म के प्रति उनकी गंभीरता और गुरूतर दायित्व बोध की झलक दिखाई पडती है। सच्चे समकालीन कवि का महत्व इसी बात से आंका जा सकता है कि वह कवि कर्म को किस भाव और उद्देश्य से देखता है। ऐसे में यह कहना अन्यथा नहीं होगा कि विजेन्द्र ने ऐसे समय में लोकधर्म का गुरूतर दायित्व वहन कर यथार्थ को स्पष्ट करने का काम किया। यद्यपि व्यवस्था कवि के पक्ष में नहीं थी। फिर भी पूरे जूनून के साथ कवि ने अपनी कविधर्म निभाया। विजेन्द्र ने केवल लोक को केन्द्र में रखा और किसी भी ऐसी आलोचना, जो लोक का विरोध करती रही उसका प्रतिरोध किया। इतना ही नहीं विजेन्द्र ने इन उपस्थित चुनौतियों का सामना करते हुए आने वाले समय का मार्ग तय करने हेतु कविता का स्वर निराला, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल की भॉति स्पष्ट प्रखर और मुखरित अभिव्यक्ति का रखा। सही मायने में विजेन्द्र इसी परंपरा के कवि हैं, समकालीन कवि हैं।

विजेन्द्र ने समकालीन कविता के समकालीन शब्द को अपने लेखन में अनेक बार स्पष्ट किया है। वे समकालीन को युग संदर्भ से जोडते हुए उसे सार्वकालिक स्वरूप प्रदान करते हैं। इनका मानना है कि समकालीन शब्द का सामान्य अर्थ ग्रहण नहीं कर विशेष अर्थ ग्रहण करना चाहिए। उनके अनुसार

समकालीनता एक समय में रचना करने वाले कवियों की रचना से संबंधित कविता नहीं है, अपितु उस कविता से है, जिसकी प्रासंगिकता प्रत्येक काल में है अर्थात जिसका महत्त्व कल भी था, आज भी है और आगे भी रहेगा।

कवि का मानना है कि समकालीन कविता की रचना के लिए कवि का आचरण और कवि कर्म दोनों उत्कृष्ट होने चाहिए। विजेन्द्र शब्द को ब्रह्म नहीं मानते वे शब्द को परिवर्तन का साधन और कारक मानते है। उनका मानना है कि शब्द का इस्तेमाल मानवीय पहलुओं के चित्रांकन के लिए ही हो तो उसका सामाजिक उपयोग माना जाता है। कवि के शब्द जीवन से निसृत होते हैं। ऋतु का पहला फूल में वे कहते हैं –

'शब्द जन्म लेते हैं जीवन की क्रियाओं से
उनमें जीवन का अनुपम बल है
शब्दों के गहरे मन में
छिपी हुई है
स्वर की महिमा अपार।'**2**

विजेन्द्र का कहना है कि कवि को अत्यन्त सतर्क होकर काम करना चाहिए। कवि कर्म साधना है। अपने काव्य संग्रहों में विजेन्द्र ने इसे अनेक स्थलों पर अपने कविता संग्रहों में उद्धृत किया है यहां तक कि बार – बार लिखा है । (बार बार लिखने का कारण है कि कवि अपनी बात पर दृढ है।) वे लिखते है ' मूर्त को अमूर्त और धुंधला होने से बचाना ही शब्द साधना है'**3** रंगनायक कविता मे उन्होने लिखा है 'कवि कर्म अनाडियों का मनोरंजन नहीं हो सकता' ।**4** कभी मैथिलीशरण गुप्त ने भी इस संदर्भ में लिखा था 'केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए'। बहरहाल इतना ही कहना पर्याप्त है कि विजेन्द्र का कवि कर्म शौक या मन बहलाने के साधन के रूप में नहीं चुना बल्कि संवेदना को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने इसे चुना।

सवाल यह भी उठता है कि विजेन्द्र ने कविता को ही प्रमुख रूप से महत्त्व क्यों दिया तो जवाब यह है कि कवि कविता को अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक प्रभावी मानता है। कविता शीघ्र परिवर्तनगामी है, संविधान और लोकतंत्र के मूल्यों को सही रीति से प्रस्तुत करने में स्वयं विजेन्द्र इसमें सहूलियत भी मानते हैं। एक बात यह भी है कि कविता कम समय में व्यक्ति तक संवेदना प्रेषित कर सकती है। जबकि अन्य विधाओं के लिए अतिरिक्त समय की जरूरत होती है।

विजेन्द्र की कविता सामान्य मनुष्य को केन्द्र में रखकर लिखी गई कविता है। आम आदमी को जानने के लिए वे सर्वप्रथम सामंत से सामान्य बने। विजेन्द्र पाल सिंह से विजेन्द्र बने। लोक में गये, आम

आदमी को जूझते देखा और फिर अपनी कलम से उनके अंदर की जिजीविषा और संघर्ष को कविता का आधार बनाया। लोक के लिए लोक की कविता की। इस सबके के लिए कवि को लंबी संघर्ष यात्रा करनी पडी है। कवि ने अपनी जन्मभूमि धरमपुर से लेकर अपनी कर्मस्थली भरतपुर और चूरू और जयपुर के संघर्षशील व्यक्ति को देखा, जाना, समझा, सुना और फिर अपनी कविताओं में उन्हें चरित्रांकित कर उन मूलभूत समस्याओं से पाठक को परिचय कराया जो आज भी भारत की समस्याएं ही हैं उनमें किसी भी प्रकार का सुधार नहीं हुआ। आजादी के लगभग 70 वर्ष बाद भी हम उन संकीर्ण और तुच्छ मानसिक और भौतिक समस्याओं से जूझ रहे है जिनका निपटारा किया जा सकता है। ऐसी ही कुछ कविताओं में विजेन्द्र ने इन समस्याओं को मूर्त रूप दिया है उनमें 'तस्वीरन बड़ी हो चली' में साम्प्रदायिकता की समस्या, 'मिट्ठन' कविता में धार्मिक आस्था के अंधानुकरण एवं कला की उपेक्षा, 'लोग भूले नहीं हैं' में कानसिंह के माध्यम से किसानों की बेकद्री, 'दादी माई' के माध्यम से बेबस वद्धा की व्यथा और मिथ्या सामाजिक दवाब का चित्रण किया । इतना ही नहीं कुछ अन्य पात्रों मागो, लादू , गंगोली, साबिर, अल्लादी शिल्पी, रमदिल्ला के माध्यम से कवि ने अपने परिवेश को बराबर संभालकर याद किया। विजेन्द्र की कविता में आये ये सभी पात्र सजीव और वास्तविक रहे ह बल्कि यह कहना सार्थक होगा कि विजेन्द्र ने इनको प्रतिनिधित्व देकर भारत के उन तमाम उपेक्षित और संघर्षशील लोगों के जीवन को कविता में रूपायित किया है। विजेन्द्र कहते है कि ये केवल पात्र नहीं है ये भारत के जनजीवन का सजीव चित्रण हैं। इनमें किसान, श्रमिक, मजदूर, नौकर आदि सभी ग्रामीण और शहरी लोग हैं। ये वे लोग है जिन्होने अपने श्रम के बूते भारत के हर व्यक्ति को सुखी, साधन सम्पन्न एवं उसके परिवेश को सौन्दर्यशाली बनाया है। ये वे लोग है जिन्होने लोकतंत्र की स्थापना के लिए अंग्रेजों से लोहा लिया। पर विडंबना यह है आज ये ही लोग सर्वाधिक उपेक्षित और विपन्न है। इनका जीवन अत्यन्त संघर्षी है। इनके जीवन की समस्याएं कभी खत्म होने का नाम ही नहीं लेती। कवि ने इन श्रमशील और जुझारू जीवनचरित्रों से जुडाव रचकर कविता को नया सौन्दर्यशास्त्र प्रदान किया। जिसका केन्द्र मनुष्य और उसका परिवेश है जिसमें वह व्यावहारित है। वे अपने इस कथन की पुष्टि अपनी कविताओं में करते है –

'इस सृष्टि का केन्द्र मनुज है .....
जब तक धरती पर जीवन है
मुझे दिखाई देगा वह'**5**

वे मनुष्य की क्रियाशीलता से प्रभावित है जिसका विवेचन वे अपनी कविता में करते है।

'मनुष्य की क्रियाशीलता से मैं सदा स्पंदित रहा हूँ'**6**

विजेन्द्र पहले कवि है जिन्होने श्रमशील और मेहनतकश लोगों के सौन्दर्य पर अपना नया दृष्टिकोण रखते है। उनका मानना है कि अब तक कविता में लोक के उत्सवी या सांस्कृतिक पक्ष का चित्रण कर लोक को व्याख्यायित किया जाता रहा है ऐसे में लोक का अधूरा पक्ष सामने आता रहा। इस अधूरेपन को लोक के संघर्ष के बिना पूरा नहीं किया जा सकता। भारतीय किसान और श्रमिक के अन्तस् की पीडा को अभिव्यक्ति नहीं देकर केवल उसके सांस्कृतिक और सामाजिक झॉकी को दिखाना उसकी उपेक्षा करना है। यह सच्चा और अच्छा सौन्दर्य नहीं है। सच्चा सौन्दर्य तो उस जीवन की क्षमताओं और सामर्थ्य का चित्रांकन करते हुए उसके संघर्ष और अभावों के साथ साथ उसकी जिजीविषा को अभिव्यक्ति देना है। विजेन्द्र सौन्दर्य के दो पक्ष मानते हैं एक सौन्दर्य और दूसरा कुत्सित सौन्दय। वागर्थ 2008 में केदारनाथ सिंह की प्रकाशित कविता 'फसल' के एक अंश पर विजेन्द्र की तीखी टिप्पणी उल्लेखनीय है। डॉ. केदारनाथ सिंह लिखते हैं–

''मैं उसे (किसान) वर्षो से जानता हूं
एक अधेड किसान
थोडा थका
थोडा झुका हुआ
किसी बोझ से नहीं
सिर्फ धरती क गुरूत्वाकर्षण से
जिसे वो इतना प्यार करता है।''**7**

इस पर विजेन्द्र ने लिखा। 'यहां कुछ सवाल हैं। क्या सचमुच किसान की कमर जीवन के किसी बोझ से न झुककर धरती के गुरूत्वाकर्षण से झुकती है। यहां अभावग्रस्त किसान की ट्रेजिक पीडा न बताकर गुरूत्वाकर्षण शब्द से केवल चमत्कार पैदा किया गया है। लाखों किसानों ने आत्महत्याएं की। क्या वे गुरूत्वाकर्षण के बोझ से दबे हुए थे ? अगर कोई किसान इस कविता को पढेगा तो कवि पर थूकेगा और कविता पर भी। अपने खेत में रात दिन वो अपना खून पसीना बहाकर जो श्रम करता है उसका मार्मिक रूप चमत्कार से ढक दिया गया है। यह कुत्सित सौन्दर्यशास्त्र है जो जीवन की कठिन परिस्थितियों से परिचित नहीं होने देता।' विजेन्द्र कविता में चमत्कार को पसंद नहीं करते थे। आचार्य शुक्ल ने भी कविता में चमत्कारवाद का विरोध किया था। डॉ सिंह की इस कविता को पढकर आलोचको ने उन्हें भाषा का जादूगर कहा था परंतु इसके विपरीत विजेन्द्र अपने जनपद के किसान से एकात्म हो चुकें हैं। उनकी कविता 'मेरे जनपद का कृषक' में किसान का वास्तविक चित्र एवं वास्तविक करूणा दिखाई देती है–

''क्या करूं

मैं इतनी किरणों का
ओ उगते भगवान भास्कर
बिना धुला
मुंह लेकर
बालक खडा हुआ
रोता है
पथ पर
यह सारे दिन भरे धूप के
बने बसन हैं
जैसे मेरे
करूं क्या इनका
मेरे जनपद का कृषक
भूखा सोता है
थक कर।''

किसानों के प्रति यह विचार ही कवि को सच्चा समकालीन कवि होने का गौरव प्रदान करता है। इतना ही नहीं विजेन्द्र की कविताओं में विगत दशकों में लिखी जा रही उत्तरआधुनिक कविताओं, कलावादियो के आधुनिक स्वरूप का प्रतिरोध भी है, जिसमें जन को संत्रस्त, विसंगति बोध से युक्त दिखाया गया है उनकी कविता में क्रियाशील मनुष्य है, संघर्ष की दास्तान है, रोजमर्रा का जीवन है। एकांत श्रीवास्तव वर्तमान के काव्य परिदृश्य पर अपनी चिंता जाहिर करते हुए लिखते हैं – ''इधर हिन्दी काव्य परिदृश्य में भूख, गरीबी, शोषण, अन्याय जैसे शब्द ही गायब हो गये हैं गो कि इन समस्याओं से हमारे देश ने निजात पा ली है। 'स्त्री – विमर्श' की कविता में 'तोडती पत्थर' की श्रमजीवी स्त्री गायब है तो 'दलित विमर्श' में हल्कू और गोबर। विजेन्द्र की कविता देश के उपेक्षित – तिरस्कृत जन को अपना विषय बनाती है।''**9**

विजेन्द्र की कविता के समकालीन स्वरूप को स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध आलोचक अरूण कमल लिखते हैं – ''विजेन्द्र की कविता कुलीन चारण कवि' – परंपरा के समानांतर अजेय प्रवाहित होती रही है। स्वयं प्रगतिशील कविता में यदा –कदा होने वाले विचलनों के प्रति सख्त चेतावनी है, विजेन्द्र की कविता।''**10**

विजेन्द्र का कवि व्यक्तित्व लोकोन्मुखी है और उनकी कविता लोक की कविता है संविधान में आस्था रखने वाली कविता है। कवि ने अपनी डायरी में लोक के संदर्भ में लिखा है – ''लोक वह जो इस

समाज के निर्माण में लगा हुआ है। किसान या श्रमिक वह लोकपुरूष है। वही सभ्यता का निर्माता है। उसका जीवन आभिजात्य के प्रति व्यंग्य और विडम्बना है। लोक भद्र का उलट है। जनतंत्र में हमें उसी लोक संस्कृति का निर्माण करना है उसी कला का और उसी रचना का।''**11**

आचार्य भरत ने भी लोक में तीन प्रकार के लोगों की चर्चा की है दुखार्त अर्थात जीवन में अभावों से दुखी लोग। श्रमार्त अर्थात कठोर श्रम से हारे थके लोग और तीसरे शोकार्त जिसका तात्पर्य है जीवन आघातों से शोकग्रस्त लोग। कहने की आवश्यकता नहीं है कि विजेन्द्र की कविता में ये तीन प्रकार के लोग मौजूद हैं। आचार्य शुक्ल ने काव्य के लोकमंगल विधान के लिए दो प्रकार के भाव अनिवार्य माने हैं ''करूणा और प्रेम। करूणा की प्रवृत्ति रक्षण की ओर होती है। प्रेम की रंजन की ओर। सामाजिक विषमता के कारण रक्षण पहले अनिवार्य है इस दृष्टि से विजेन्द्र की कविता शोषित और पीडित के साथ अपनी संवेदना के साथ आती है। 'तलछट' कविता में उन्होने लिखा है –

''इन रेत टीलों में
तॅबई लहरें देखता हूं दूर दूर तक
धुंधलका है समय का
कराल है काल
पुलिस के डंडे खाते किसानों को देखा
पौंछते खून बहता कनपटी से
वे मांगते हैं अपनी जमीन का हक
अपने वनों पर अधिकार
तुम उन्हें करते जाते हो बेदखल
बेघर बेदम दरबदर
सामना कर रहा हूं
तुम्हारे कुचक्र भरे प्रहारों का''**12**

उपर्युक्त पंक्तियां सरकार की जन विरोधी नीतियों की आलोचना कर रही हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का फायदा पहुंचाकर किसानों को उनकी जमीन का मामूली मुआवजा देकर विकास के नाम पर बेदखल किया जा रहा है। जल, जंगल और जमीन छीने जा रहे हैं। लेकिन कवि इस स्थिति का विरोध करता है और जन को संगठित होने का आह्वान करता है वह जनशक्ति को महत्त्व देता है। कवि इस ढॉचे को तोडना चाहता है और अपनी कविता के माध्यम से वर्तमान लोकतंत्र का वास्तविक लोकतंत्र अर्थात सुराज में बदलना चाहता है इसके लिए वह उत्पादक वर्ग का संगठित स्वरूप देखना चाहता है। कवि कहता है कि 'किसान इस देश की जनशक्ति है श्रमिकों से उनका गठजोड नये भविष्य का संकेत है।

इसके बिना कुछ नहीं। ये दोनों हमारी असंख्य भुजाएं हैं, कान हैं, दिल की धडकनें भी। जो कविता इनकी आवाज बने वह मीर है। वे हर समय के साथ हैं। अथाह दुख कठिनाइयों में डूबकर वे जिन्दा हैं। कभी घना कोहरा छॅटेगा, निखरी धूप खिलेगी।**13**'

इस प्रकार विजेन्द्र का कवि कर्म लोकपक्षी धर्म को निभाने में समथ दिखाई देता है। इनकी कविता उन लोकतांत्रिक मूल्यों का समर्थन करती है जो जन के उत्थान के लिए हैं। वे जमीन और जनता के कवि हैं । एकांत श्रीवास्तव उनकेयोगदान पर चर्चा करते हुए लिखते हैं कि 'कवि विजेन्द्र हिन्दी और भारतीय काव्य – परिदृश्य में कवियों की उस विरल प्रजाति का प्रतिनिधत्व करते हैं जो निरंतर अपनी जमीन और जनता की कविता लिखते रहे हैं – अपनी अटल और निष्कंप आस्था के साथ, और जिनकी कविता की स्मृति मात्र अनेक युवा कवियों को मार्ग विचलित होने से बचा लेती है। कहना न होगा कि यह नेरूदा, निराला, मुक्तिबोध और त्रिलोचन की काव्य परंपरा का अधुनातन स्वरूप है।'**14**

संदर्भ :–

1. वक्तव्य विजेन्द्र बूंद तुम ठहरी रहो पृ. 7 संपादक मंजु शर्मा एकता प्रकाशन चूरू 2014
2. अंधकार को चीर आई कोंध अकेली, ऋतु का पहला फूल, विजेन्द्र, पृ. 166 पंचशील प्रकाशन जयपुर 1994
3. निशि को, पहले तुम्हारा खिलना, विजेन्द्र पृ. 30, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2004
4. वही, पृ. 85
5. वही, पृ. 93
6. वही, पृ. 98
7. कौन है बडा कवि आजकल, स्पर्श (वेब ब्लॉग) मूल्यांकन 1 विजेन्द्र, द्वारा अमीरचंद वैश्य, पृ. 4
8. मेरे जनपद का कृषक, कवि ने कहा, विजेन्द्र पृ. 49/50 किताबघर प्रकाशन दिल्ली 2008
9. वही होगा मेरा कवि, एकांत श्रीवास्तव, वागर्थ पत्रिका अगस्त 2015 पृ. 8/9
10. समय का भुजबंध, अरूण कमल, पृ. 96, बूंद तुम ठहरी रहो एकता प्रकाशन चूरू 2014
11. कवि की अन्तर्यात्रा, विजेन्द्र पृ. 18, शिल्पायन दिल्ली 2008
12. तलछट, बेघर का बना देश, विजेन्द्र पृ. 118, साहित्य भंडार इलाहबाद
13. चिन्तन दिशा, अमीरचंद वैश्य का आलेख लोक विमर्श वेब ब्लॉग पृ. 4
14. वही होगा मेरा कवि, एकांत श्रीवास्तव, वागर्थ पत्रिका अगस्त 2015 पृ. 8